शोध पत्र- हिन्दी

लम्बी कविताएँ और 'धूमिल'

* रामसिंह परमार

* स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर

June,2013

हिन्दी की समकालीन लम्बी कविता आम आदमी के जीवन की विकृतियाँ विषमताओं विद्रुपताओं एवं संघर्षो की खुली पहचान हैं वह अँधेरे का दामान थामें अपने युगीन सामाजिक परिस्थितियों की कुरूपताआऐं और अंतर्विरोधों के बीच छटपटाते आमदी की मानवीय धरातल पर रोशनी की तलाश हैं। इसीलिए इसके कथ्य में भाव एवं विचार दोनों का समन्वित समावेश है। वस्तुत: यही कारणहै कि लम्बी कविता व्यक्ति और समाज दोनों की संवेदनाओं, परिवेशज्न्य दबावों एवं तनाव का सार्थक साक्षात्कार करने वाली कविता है।

लम्बी कविता हिन्दी कविता की एक नई परंपरा को लेकर चलती है। यह कविता मानव-जीवन के विविध पक्षों को उभारने वाली कविता है। मानव-जीवन का खुला यथार्थ ही इस कविता का मूल कथ्य है। डॉ. यतीन्द्र तिवारी के शब्दों में ''लम्बी कविता मानव जीवन के विविध पक्षों के साथ गहराई से जुङकर चली हैं इसमें व्यकित और समाज धर्म और साम्प्रदायिकता, राजनीति और नैतिकता, इंसानियत और हैवानियत, भगवान और शैतान, इतिहास और भविष्य विगत और वर्तमान तथा परिस्थिति और परिवेश की विसंगतियों एवं अंतर्विरोधों का गहरा सरोकार हैं ''[१]

International Indexed & Refereed Research Journal, ISSN 0974-2832, (Print) E- ISSN- 2320-547, June 2013, VOL - IV * ISSUE- 53

लम्बी कविताओं का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। छायावाद के पहले लम्बी तथा कथात्मक कविताएँ नहीं मिलती । छायावाद तक आते-आते निराला पंत-प्रसाद की कविताओं में कुछ लम्बी कविताएँ मिलती है। इस दृष्टि से निराला की 'राम की शक्ति पूजा 'एक प्रथम तथा सफल प्रयास है। अनेक विद्धानों ने लम्बी कविताओं की सार्थक शुरूआत 'राम की शक्तिपूजा' से ही मानी है। डॉ. रमेश कुंतक मेघ के शब्दों में ''लम्बी कविता विधा की समकालीन तथा सार्थक शुरूआत निराला की '''राम की शक्तिपूजा' के पौराणिक संदर्भ से हुई और इसके बाद इसका शुभांरभ मुक्तिबोध की अँधरे में से हुआ। [२]

लम्बी कविता कोई आन्दोलन नहीं हैं, बल्कि सामाजिक संदर्भो से जुङे संवेदनाओं का चिंतन हैं जिसे अभिव्यक्त करने के लिए कवियों ने इन लम्बी कविताओं का सहारा लिया है। इसकी सफलता तथा श्रेष्ठता को देखकर ही नई कविताओं की बाढ़ सी आती है। लम्बी कविताओं को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं।

१. छायावादी लम्बी कविताएँ

२. प्रयोगवादी लम्बी कविताएँ

३. साठोत्तरी लम्बी कविताएँ

निराला की 'राम की शक्तिपूजा' और सुमित्रानन्दन पंत की 'परिवर्तन' छायावाद की लम्बी कविताएँ कही जा सकती है। प्रयोगवादी लम्बी कविताओं के अंतर्गत सन् १९५१ में प्रकाशित नरेश मेहता की 'समय देवता' को लिया जा सकता है। साठोत्तरी लम्बी कविताओं में निम्नलिखित प्रमुख कविताओं को देखा जा सकता है-

१. अँधेरे में - मुक्ति बोध, प्रकाशन काल, १९६४
२. मुक्ति प्रसंग- राजकमल चौधरी १९६६
३. आत्महत्या के विरूद्ध - रघुवीर सहाय, १९६७
४. लुकमान अली- सौमित्र मोहन, १९६८
५. फिर वही लोग- रामदरश मिश्र, १९६९
६. पटकथा - धूमिल - १९७२
७. कुआनों नदी- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
८. उपनगर में वापसी - बलदेव वंशी।
९. बलदेव खटिक- लीलाधर जगूडी
१०. हरिजन गाथा- नागार्जुन

प्राय: 'धूमिल' की 'पटकथा' की तुलना मुक्तिबोध के 'अँधेरे में' से की जाती है। साठोत्तरी लम्बी कविताओं का पथप्रदर्शन करने वाली 'अँधेरे में' एक ऐसी कविता है जो अपनी प्रतिमान स्वयं है। यह एक ऐसी कविता है जो सामाजिक संदर्भो से जुड़ी कथा को लेकर उपस्थित होती है। वह एक खण्ड कथा है जो कवि की आत्मकथा से जोड़ती चलती है। कवि के भीतर और बाहर के टकराव कविता है 'अँधेरे में'। डॉ. कुमार कृष्ण लिखते हैं- ''अँधेरे में से गुजरना एक काव्यमाया है। भित्र-भित्र अनुभवों के बीच यह कवि की न समाप्त होने वाली रचनात्मकता की तलाश है जिसे उसने परम अभिव्यक्ति का नाम दिया है। ''[३]

मुक्तिबोध की 'अँधेरे में' सबसे लम्बी और उतनी ही महत्वपूर्ण कविता है। लम्बी कविता के इतिहास में यह 'मील का पत्थर' मानी जाती है और इतिहास इसे कभी भूल नहीं पायेगा। मुक्तिबोध की 'अँधेरे में' व्यक्तित्व की खोज की कविता है। यह खोज उस मार्ग की खोज है जिस से मध्यम वर्गीय काव्य- नायक के व्यक्तिवान्तरित्त होने की क्रिया के पूर्ण होने के साथ व्यापक जनता को मुक्ति मिल सके। मुक्तिबोध अँधेरे में भटकता है प्रकाश की खोज में। कवि भीतर और बाहर से निरंतर लड़ता रहता है। श्री रामनारायण शुक्ल लिखते हैं- ''मुक्तिबोध ने, इस कविता में, मुक्ति दृष्टि को रचनात्मक रूप देना चाहा है और यह खोज व्यंग्य करने की विषय वस्तु नहीं गंभीरता पूर्वक सोचने की है।''[४] 'अँधेरे में' शिल्प और कथ्य दोनों की दृष्टि से उच्चर कोटी की रचना है।

'धुमिल' की सबसे लम्बी कविता 'पटकथा' है। यह पटकथा भारत की आजादी से प्रारंभ होकर सातवें दशक तक ही भारत की दशा का अंकन करती है। भारत के राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक पटल पर जो घटित हुआ अथवा हो रहा है उसका बेलोस चित्रण ही पटकथा है। 'धूमिल' की यह कविता व्यक्ति के टूटते हुए विश्वासों एवं आस्थाओं

की अभिव्यक्ति करती है। जनतंत्र के लिए संघर्ष किया, आजादी भी मिली पर उसक आजादी ने क्या किया? आजादी के संदर्भ बदल गये और वह सिर्फ तमाशा और मदारी की भाषा बनकर रह गयी। धीरे-धीरे आजादी का खोखलापन कवि समझता गया उसी की त्रासदी 'पटकथा' में हैं। कवि को आशा थी इसीलिए उसने इंतजार किया।

इस तरह जो था उसमें मैंने
, जी भर कर प्यार किया
और जो नहीं था
उसका इंतजार किया।५

स्वतंत्र होने की अनुभूति वह कई जगह करना चाहता है। अस्पतालों में बाजारों में गाँवों में, जंगलो में पहाड़ों में पर उसे वह अनुभूति होती नहीं न आजादी का वह सुख ही अनुभव कर पाता है। सम्पूर्ण देश में आत्महीनता का भाव उसे दृष्टिगोचर होता है। सन् १९६० तक आते - आते का मोह भंग होने लगा। उसे लगा की जनतंत्र, त्याग, स्वतंत्र, संस्कृति, शांति तथा मनुष्यता जैसे शब्द केवल उसे ठगने के लिए गढ़ गये हैं। सन् ६२ के मोहभंग ने तो कवि को पूरी तरह परास्त कर दिया 'पटकथा', पर अपनी टिप्पणी देते हुए डॉ. चमनलाल गुप्ता लिखते हैं- ''पटकथा, स्वाधीन भारत की कहानी है जिसमें राजनीतिक उथल-पुथल के चित्रों के बीचो-बीच हमारे जनतंत्र की कमजोरियों को पिरोया गया है। देश की जनता की मन: स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।''६

'पटकथा' एक नाटकीय एकालाप है। कवि वर्तमान मूल्यों को ठुकराकर नई संभावनाओं के लिए प्रयन्तशील रहा है। प्रो. मंजु अग्रवाल लिखती हैं- ''यह कविता भाषिक स्तर पर जीवन की विड़म्बना एवं विसंगतियों की यथार्थता को अभिव्यक्त करती है और यही जनकविता की सबसे बड़ी पहचान हैं। इस कविता का कथ्य जन सामान्य से अत्यधिक संम्बन्ध है। भविष्य का ब्लू प्रिन्ट यह उपस्थित नहीं करती वरन वर्तमान के आधार पर भविष्य की संभावनाओं की पूर्वकल्पना हम कर सकते हैं।''७

'अँधेरे में' ४० पृष्ठों की कविता हैं तो पटकथा ३५ पृष्ठों की कविता हे अर्थात दोनों विशाल चित्रफलक की कविताएँ हैं। दोनों में आत्मपीड़ा का स्वर, मुखरित हुआ हैं। 'अँधरे में' व्यक्ति स्वातंत्र्य की खोज हैं तो 'पटकथा' दूसरे प्रजातंत्र की तलाश की कविता है। दोनों कविताएँ आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी है। मुक्तिबोध ने 'अँधेरे में' फंतासी का प्रयोग किया है तो धूमिल का चित्रफलक एक सपाट हैं क्योंकि वे सपाट बयानी में अपनी बात रखते हैं। मुक्तिबोध में मूलत: 'अँधेरे में' बिम्ब अधिक हैं क्योंकि कवि अँधेरे में प्रकाश की ओर मार्गक्रमण करता है। धूमिल आजादी का सही संदर्भ समाज के हर कोने में ढूँढना चाहता है। पहले प्रजातंत्र ने निराशा, के सिवाय कवि को कुछ नहीं दिया इसीलिए ही कवि दूसरे प्रजातंत्र की तलाश में निकला हैं।

'धूमिल' की 'पटकथा' की अपेक्षा मुक्तिबोध की 'अँधेरे में' गहनता अधिक है। 'अँधेरे में 'सज्ञान पाठकों की कविता हैं तो 'पटकथा' आम पाठकों की कविता हैं। साधारणत: कोई भी पाठक धूमिल की कविता को समझ सकता है क्योंकि धूमिल की कविता स्पष्ट वक्तव्यों की कविता है। इस दृष्टि से मुक्तिबोध की कविता सोच-विचार और चिंतन की कविता है। मुक्तिबोध मस्तिष्क को झकझोरने वाले कवि हैं। सम्प्रेषणीयता की दृष्टि से धूमिल की कविता अधिक स्पष्ट ओर अधिक सरल प्रतीक होती है। दोनों को भी चिंता है, दोनों मस्तिष्क को झकझोर देते हैं फ़र्क इतना हैं कि मुक्तिबोध में यह मात्रा थोड़ी अधिक है धूमिल में कम ।

शिल्प की दृष्टि से देखा जाये तो मुक्तिबोध शिल्पविधान में धूमिल से आगे निकल गये हैं तो भावजगत में धूमिल बाजी मार लेते हैं। मुक्तिबोध अपनी कविताओं में विचार पिरोने वाले कवि हैं, यह ऐसा विचार है जो कवि की चिंता से पाठकों को जोड़ने का काम करता हैं। 'अँधेरे में' द्वंद्व की कविता हैं 'पटकथा' में ऐसा कोई द्वंद्व नहीं है। 'अँधेरे में' के संदर्भ में डॉ. इन्दु वशिष्ठ लिखती हैं- ''अँधेरे में एक ऐसी सशक्त और ऐतिहासिक रचना है जहाँ अस्तित्व की पहचान के लिए लगातार संघर्ष है। वह संघर्ष राजनैतिक, सामाजिक, पूँजीवादी शोषक आदि के हर गली, हर मोड़ से गुजरता हैं।''८

कुल मिलाकर 'अँधेरे में' के कारण जितनी सफलता मुक्तिबोध को मिली उतनी ही सफलता धूमिल को 'पटकथा' से मिली। दोनों ही कविताएँ हिन्दी की लम्बी कविताओं में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं।

उपरोक्त सभी बातों के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता हैं कि समकालीन कविता के एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में धूमिल हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं। समकालीन कविता की अनेक विशेषताएँ उनकी कविताओं में विद्यमान हैं।

समकालीन कविता के प्रमुख कवियों में अपनी विशेषता के कारण धूमिल अपना अलग स्थान स्थापित करते हैं। धूमिल ने सपाटबयानी के माध्यम से पाठकों से अपना रिश्ता कामय किया है। इसीलिए वे भाव की अपेक्षा शिल्प को कम महत्व देते हैं। उनकी समप्रेषणीय शक्ति ही उनकी खास विशेषता है।

हिन्दी में अनेक लम्बी कविताएँ लिखी गयी हैं । लम्बी कविताओं की परम्परा में 'अंधेरे में' का मुकाबला करने वाली एकमेव कविता है धूमिल की 'पटकथा'। जो स्वातंत्रयोत्तर भारत की स्थिति का जीवंत दस्तावेज है।

Int

संदर्भ ग्रंथ

१. हिन्दी की जनवादी कविता - डॉ. वशिष्ठ अनूप पृ. १४३
२. समकालीन हिन्दी कविता की संवेदना - डॉ. गोविन्द रजनीश पृ. ११२
३. वही, पृ- ११५
४. समकालीन हिन्दी कविता की संवेदना - डॉ. गोविन्द रजनीश पृ. ११७
५. नवें दशक की हिन्दी कविता- सं. डॉ. यतेन्द्र तिवारी, पृ. २६७
६. दूसरे प्रजातंत्र की तलाश में धूमिल- डॉ. कुमार कृष्ण पृ. ४५
७. वही, पृ. ४६
८. जनवदी समझ और साहित्य - रामनारयण शुक्ल पृ. २४०